(1) B.Ed - Ist Year
2019-2021

20/04/2020

भाषा एक कौशल है।-

बालक जन्म के पश्चात परिवार के सदस्यों में रह कर भाषा के तत्वों को ग्रहण करना प्रारंभ करता है और अनुकरण द्वारा धीरे-धीरे उसे बोलने लगता है। किन्तु सत्य यह है कि भाषा का सही और स्तरीय प्रयोग केवल सुनने और बोलने से ही नहीं आता, इसके लिए उसे बहुत सी बातों को ध्यान में रखना होगा, तब उसे भाषा के प्रयोग में कुशलता एवं पूर्णता की प्राप्ति होगी -

(1) भाषा एक कला है- बोर्ड ऑफ लंदन द्वारा प्रकाशित ग्रंथ में भाषा के विषय में कहा गया है- "भाषा एक कौशल, कला, भाव एवं क्रिया है"

(2) भाषा निरंतर अभ्यास एवं व्यवहार से आती है।

(3) भाषा सीखने के प्रति अभिरुचि।

(4) चारों भाषा कौशलों में दक्ष बनाना।

(5) भाषा सीखना मात्र व्याकरण सीखना नहीं है।

(6) भाषा पर पूर्णाधिकार प्राप्त करना

Scanned with CamScanner

② भाषा कौशल के प्रकार

वाचन कौशल (Speaking Skill)

वाचन एक कला है, वाचन की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यकता होती है। व्यक्ति का सबसे बड़ा आभूषण उसकी सभ्य सुसंस्कृत वाणी होती है। क्योंकि मनुष्य द्वारा बनाये गये आभूषण तो टूट या घिस जाते हैं। परन्तु वाणी रूपी आभूषण सदा बनी रहती है। व्यक्ति सर्वोत्तम आभूषण एक मात्र वाणी है। इसी लिए कहा जाता है कि अमृत भी मधुर वाणी में होता है।

मनुष्य अपने भावों व विचारों को बोलकर या लिखकर करता है। भावों एंव विचारों का संप्रेषण या प्रकाशन ही रचना है।

रचना के दो मुख्य रूप होते हैं।

(1) मौखिक रचना
(2) लिखित रचना

डैथरीन ओकानर के अनुसार- "वाचन वह जटिल प्रक्रिया है जिसमें सुनने के गतिवाही माध्यमों का मानसिक पक्षों से सम्बन्ध होता है।" (3)

वाचन कौशल की विशेषताएँ

सुंदर वाचन में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है:-

(1) मधुरता, प्रभावपूर्ण तथा ~~चम~~ चमत्कार पूर्ण ढंग से उतार चढ़ाव के साथ वाचन होना चाहिए।
(2) प्रत्येक अक्षर (वर्ण) को शुद्ध एवं उच्चारण करना।
(3) प्रत्येक शब्द को अन्य शब्दों से अलग करके उचित बल तथा विराम के साथ पढ़ना।
(4) वाचन में सुन्दरता के साथ ~~प्रवाह~~ प्रवाह बनाये रखना।
(5) आवश्यकतानुसार उचित हाव-भाव का होना तथा समान गति से पढ़ना।

वाचन कौशल के आधार (क्रियाएँ)

वाचन के अन्तर्गत मुख के अवयवों की क्रियाशीलता अधिक होती है। जिनका विवरण ध्वनि विज्ञान में विस्तारपूर्वक किया गया है।

वाचन के मुख्य दो आधार होते हैं:-

Scanned with CamScanner

(1) वाचन मुद्रा - बैठने खड़े होने का ढंग, हाथ, नेत्र/मुख मुद्राएं (का) पुनसंचालन, वाचन सामग्री पकड़ने का ढंग
(2) वाचन शैली - भावानुसार स्वर के उचित आरोह - अवरोह के साथ पढ़ना।

श्रवण कौशल :- (Listening Skill)

वाचन सुनने और सुनकर उसका अर्थ एवं भाव समझने की क्रिया को श्रवण कौशल कहते हैं। श्रवण कौशल का सैद्धान्तिक पक्ष ध्वनि विज्ञान के अन्तर्गत आता है। हम दूसरे अर्थ में श्रवण कह सकते हैं :-

कानों द्वारा जो ध्वनियाँ ग्रहण की जाती हैं और मस्तिष्क द्वारा उनकी अनुभूति को श्रवण कहते हैं। अर्थात् जब कोई व्यक्ति हमारे सामने अपने भाव एवं विचार मौखिक भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है और हम उसे सुनकर यथा भाव एवं विचार समझते और ग्रहण करते हैं तो हमारी यह क्रिया सुनना अथवा श्रवण कहलाती है।

श्रवण कौशल का मुख्य आधार (क्रियाएँ)

श्रवण कौशल की सार्थकता के लिए कुछ आवश्यक आधार होते हैं जो निम्नलिखित हैं :-

(1) सुनने वाले की श्रवणेन्द्री सामान्य एवं क्रियाशील हो।
(2) भाषा की ध्वनियों से शब्दों का बोध होना।
(3) सुनने वाला ध्वनियों के प्रति सजग हो, और उन्हे समझने का प्रयास करता हो।
(4) सुनने की रुचि तत्परता एवं एकाग्रता हो।

(5) ध्वनियों से जो भाव एंव विचार सम्प्रेषित किए जा रहे हैं, उन्हे बोधगम्य कर सके।

(6) ध्वनियों के साथ बोलने वाले के हाव-भाव से भी उसकी अभिव्यक्ति का अनुमान लगाना चाहिए।

(7) वाचन की प्रभावशीलता को सुनने के आधार पर आकलन करते हैं कि वक्ता जो कहना चाहता है, श्रोता उसको शुद्ध रूप में बोधगम्य कर लेता है अथवा नही।

लेखन कौशल (Writing Skill)

रचना, भावों एंव विचारों की कलात्मक अभिव्यक्ति है। वर्णों को क्रम से लिपिबद्ध, सुव्यवस्थित करने की कला है, भावों एंव विचारों की यह कलात्मक अभिव्यक्ति जब लिखित रूप में होती है, तब उसे लेखन अथवा लिखित रचना कहते हैं।

अभिव्यक्ति की दृष्टि से लेखन तथा वाचन परस्पर पूरक होते हैं। वाचन से लेखन कठिन होता है। लेखन में वर्तनी का विशेष महत्व होता है, जबकि वाचन में उच्चारण का महत्व होता है। उच्चारण की शुद्धता वाचन में आवश्यक तत्व है, और लेखन में असरों का सुडौल होना एंव वर्तनी की शुद्धता होना आवश्यक है।

लेखन की कला स्थायी साहित्य का अंग है। लेखन की विषयवस्तु साहित्य का क्षेत्र होता है और वाक्य लिखित भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम होता है।

लेखन में सोचने तथा चिन्तन

के लिए अधिक समय मिलता है। जबकि वाचन में भावाभिव्यक्ति का निरन्तर प्रवाह बना रहता है। सोचने का समय नहीं रहता। मानव जीवन में लेखन तथा वाचन दोनों कौशलों का महत्व है।

लेखन अभिव्यक्ति के अनेक रूप होते हैं जैसे - कहानी, नाटक, निबन्ध, कथायें, आत्मकथा, संवाद, संस्मरण, जीवनी, कविता, गीत आदि।

लेखन के तत्व :-

भाषा का मूल रूप मौखिक होता है और मौखिक भाषा की कुछ वाक्य, वाक्य की कुछ शब्द और शब्द की कुछ अक्षर (वर्ण) होते हैं। प्रत्येक भाषा के अक्षरों को चिन्ह विशेषों से प्रकट किया जाता है। इन चिन्ह विशेषों को उस भाषा की लिपि कहते हैं।

लिखने की दृष्टि से लिपि का ज्ञान होना अत्यन्त अवश्यक है। यह लेखन की प्रथम प्राथमिकता है। दूसरे स्तर पर शब्द ज्ञान होना तथा तीसरे स्तर पर सर्वमान्य वाक्य रचना का ज्ञान होना चाहिए। ये तीनों ही लिखित भाषा के मूल तत्व हैं।

पठन कौशल (Reading Skill)

लिखित भाषा को पढ़ने की क्रिया को पठन कहते हैं। भाषा के सन्दर्भ में पठन का अर्थ कुछ भिन्न होता है - भाव और

Scanned with CamScanner

विचारों को लिखित भाषा के माध्यम से पढ़कर (अभिव्यक्ति को) समझना पठन कहलाता है।

लिखने का उद्देश्य होता है कि भाव और विचारों को हम दूसरों तक पहुँचाना चाहते हैं। अन्य व्यक्ति जब उसको लिखित भाषा के रूप में पढ़ेगा, तब उसके भाव एवं विचारों को समझ लेगा। इस क्रिया को पठन कहते हैं।

पठन के प्रकार:-

पठन दो प्रकार से किया जाता है:-

(1) मौखिक रूप से पठन या बोलकर पढ़ना।

(2) मौन रूप से पठन या मन ही मन पढ़ना।

मौखिक रूप पढ़ने के कई रूप होते हैं।

(i) व्यक्तिगत पठन
(ii) सामूहिक पठन
(iii) आदर्श पठन
(iv) अनुकरण पठन आदि।

पठन के आवश्यक तत्व (कारक):-

लिखित भाव एवं विचारों को मौखिक या मौन रूप में पढ़कर बोधगम्य करने निम्नांकित तत्व है:-

(1) पठन में दृश्य इन्द्रिय (आँख) का सामान्य तथा क्रियाशील होना आवश्यक है

(2) लिपि भाषा लिपि का ज्ञान होना
(3) लिखित पाठ्य-सामग्री की शब्दावली का बोध, एवं शुद्ध उच्चारण का अभ्यास होना।
(4) पठन में तत्परता, एकाग्रता एवं रुचि होना।
(5) पठन में लिखित अभिव्यक्ति के साथ उसके अर्थ एवं भाव को समझने की क्षमता होना।
(6) वाक्य विज्ञान, रूप विज्ञान, एवं अर्थ विज्ञान का बोध होना।

डा० दिनेश सिंह यादव
बी०एड० विभाग (असो०प्रोफेसर)

20/4/2020

B.Ed 1st year
2019-2021

Scanned with CamScanner